



Sonali Nagle

29 Aug 1987

01:17 PM

Jasai

Model: Web-MyKundli

Order No: 119924201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 29/08/1987
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 13:17:00 घंटे
इष्ट _____: 17:16:38 घटी
स्थान _____: Jasai
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:56:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:01:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:37:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:39:04 घंटे
वेलान्तर _____: -00:01:07 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:07:01 घंटे
सूर्योदय _____: 06:22:20 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:55:22 घंटे
दिनमान _____: 12:33:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 11:46:11 सिंह
लग्न के अंश _____: 16:42:46 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: स्वाति - 1
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: शुक्ल
करण _____: बालव
गण _____: देव
योनि _____: महिष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: रू-रूपा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajiJyotishkendra@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	भाद्रपद	7
पंजाबी	संवत : 2044	भाद्रपद	13
बंगाली	सन् : 1394	भाद्रपद	12
तमिल	संवत : 2044	आवनी	13
केरल	कोल्लम : 1163	चिंगम	13
नेपाली	संवत : 2044	भाद्रपद	13
चैत्रादि	संवत : 2044	भाद्रपद	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2044	भाद्रपद	शुक्ल 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 23:11:39
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:58:30 घंटे
जन्म योग _____ : स्वाति
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
योग समाप्ति काल _____ : 15:42:25 घंटे
जन्म योग _____ : शुक्ल
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 11:08:21 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 00:46:13
भभोग _____ : 61:30:10
भोग्य दशा काल _____ : राहु 17 वर्ष 9 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

Shri Dadaji Jyotish kendra

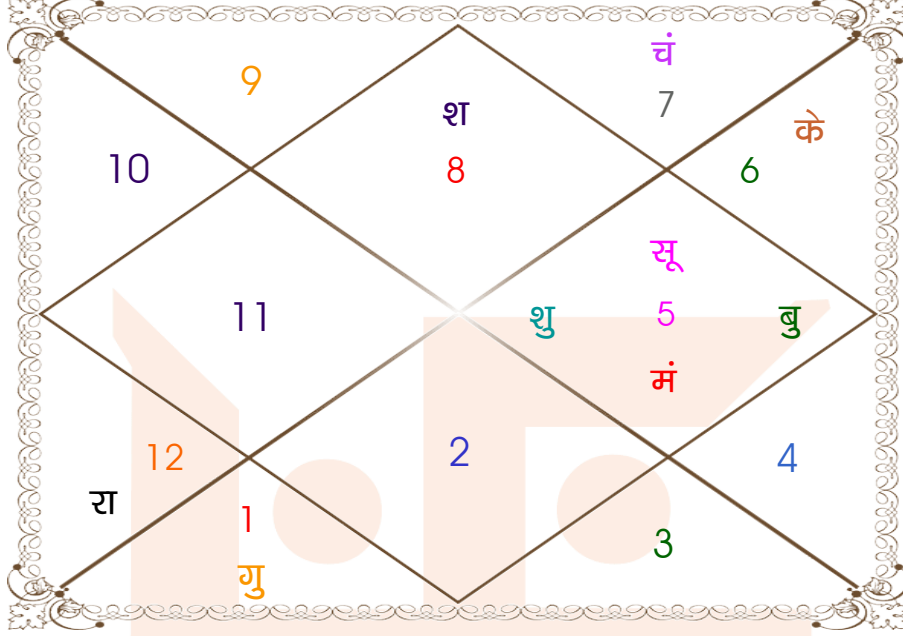
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

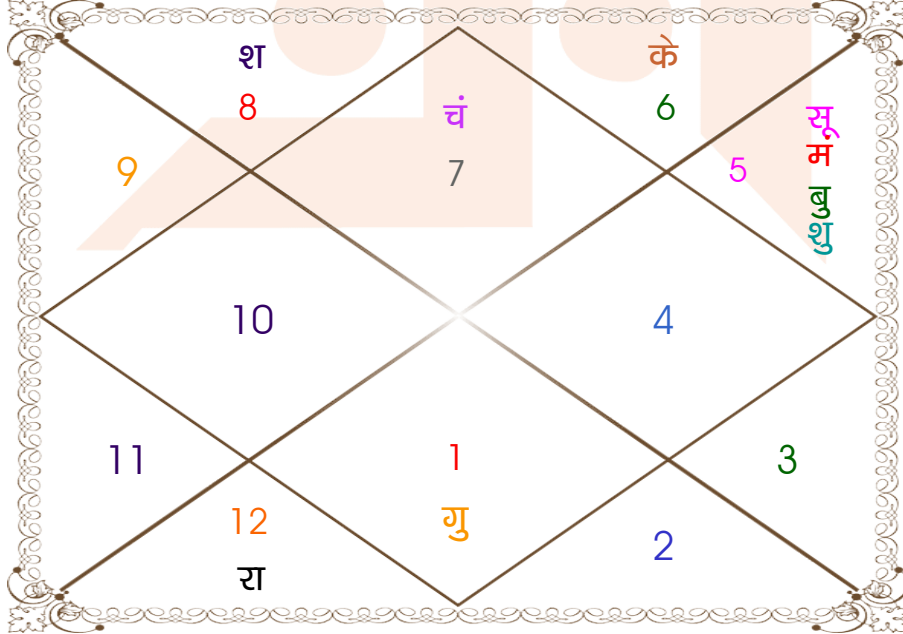
dadajiJyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

रा	गु		
			शु म सू बु
	श ल	चं	के

लग्न कुण्डली

	गु	रा
मं बु	सू	चं
के		ल श

विंशोत्तरी
राहु 17वर्ष 9मा 9दि
राहु

29/08/1987

10/06/2107

राहु	08/06/2005
गुरु	08/06/2021
शनि	08/06/2040
बुध	08/06/2057
केतु	08/06/2064
शुक्र	08/06/2084
सूर्य	08/06/2090
चन्द्र	09/06/2100
मंगल	10/06/2107

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 11मा 21दि
धान्या

20/08/2025

19/08/2028

धान्या	19/11/2025
भ्रामरी	21/03/2026
भद्रिका	20/08/2026
उल्का	18/02/2027
सिद्धा	19/09/2027
संकटा	20/05/2028
मंगला	19/06/2028
पिंगला	19/08/2028

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

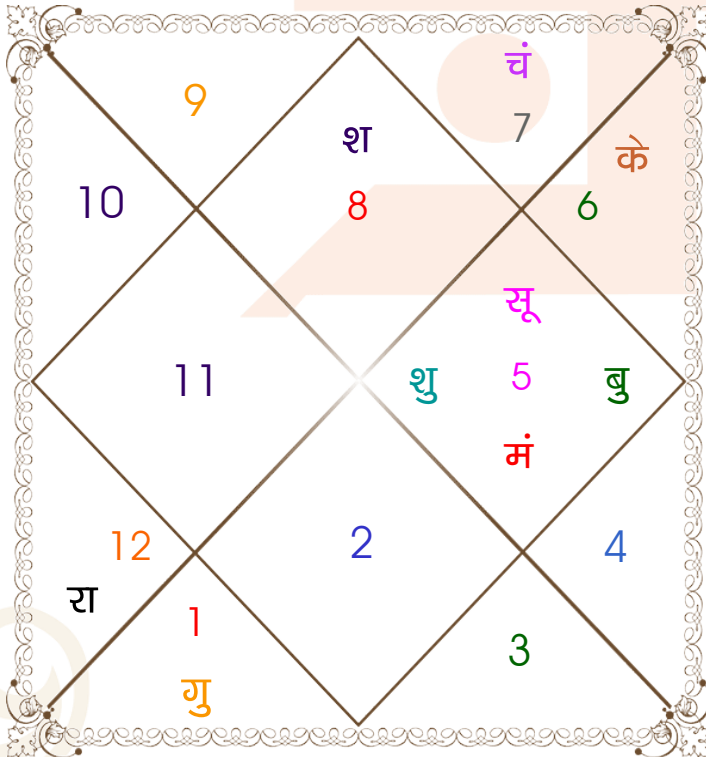
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	16:42:46	320:47:08	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
सूर्य			सिंह	11:46:11	00:57:59	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मूलत्रिकोण
चंद्र			तुला	06:49:55	12:52:04	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	सम राशि
मंगल		अ	सिंह	10:27:00	00:38:12	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध		अ	सिंह	20:23:48	01:49:04	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
गुरु		व	मेष	05:53:49	00:01:54	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	मित्र राशि
शुक्र		अ	सिंह	13:25:46	01:14:23	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
शनि			वृश्चि	20:55:47	00:00:58	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु			मीन	08:51:07	00:01:43	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
केतु			कन्या	08:51:07	00:01:43	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष		व	वृश्चि	29:02:17	00:00:10	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
नेप		व	धनु	11:38:32	00:00:36	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो			तुला	13:57:41	00:01:23	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
दशम भाव			सिंह	21:55:37	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	शनि	--

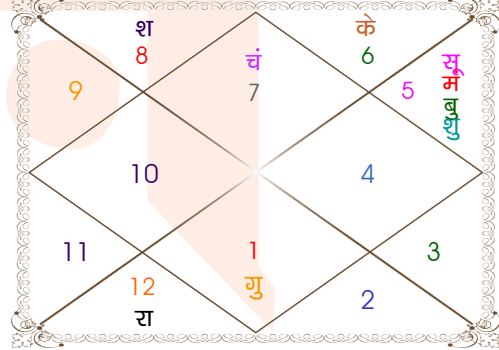
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:04

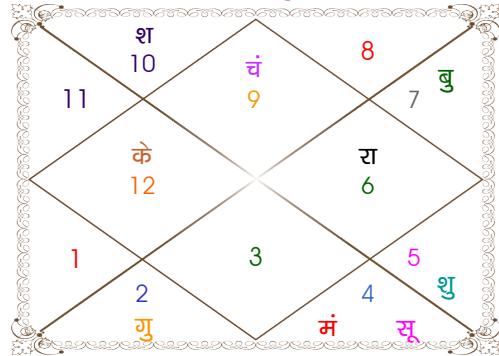
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 02:34:55	वृश्चिक 16:42:46
2	धनु 02:34:55	धनु 18:27:03
3	मकर 04:19:12	मकर 20:11:20
4	कुम्भ 06:03:29	कुम्भ 21:55:37
5	मीन 06:03:29	मीन 20:11:20
6	मेष 04:19:12	मेष 18:27:03
7	वृष 02:34:55	वृष 16:42:46
8	मिथुन 02:34:55	मिथुन 18:27:03
9	कर्क 04:19:12	कर्क 20:11:20
10	सिंह 06:03:29	सिंह 21:55:37
11	कन्या 06:03:29	कन्या 20:11:20
12	तुला 04:19:12	तुला 18:27:03

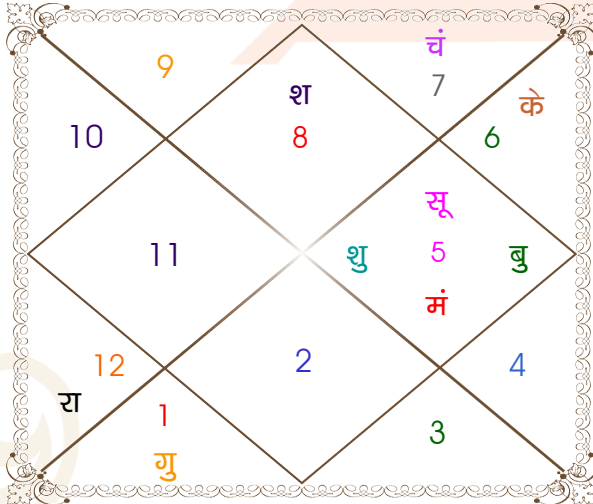
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	16:42:46
2	धनु	16:34:33
3	मकर	18:35:06
4	कुम्भ	21:55:37
5	मीन	23:38:37
6	मेष	21:39:50
7	वृष	16:42:46
8	मिथुन	16:34:33
9	कर्क	18:35:06
10	सिंह	21:55:37
11	कन्या	23:38:37
12	तुला	21:39:50

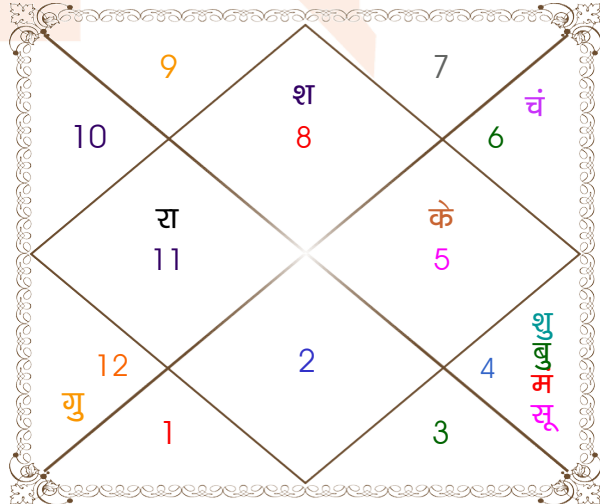
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 17 वर्ष 9 मास 9 दिन

राहु 18 वर्ष 29/08/1987 08/06/2005	गुरु 16 वर्ष 08/06/2005 08/06/2021	शनि 19 वर्ष 08/06/2021 08/06/2040	बुध 17 वर्ष 08/06/2040 08/06/2057	केतु 7 वर्ष 08/06/2057 08/06/2064
राहु 19/02/1990	गुरु 27/07/2007	शनि 11/06/2024	बुध 05/11/2042	केतु 04/11/2057
गुरु 14/07/1992	शनि 07/02/2010	बुध 19/02/2027	केतु 02/11/2043	शुक्र 04/01/2059
शनि 21/05/1995	बुध 15/05/2012	केतु 30/03/2028	शुक्र 02/09/2046	सूर्य 12/05/2059
बुध 08/12/1997	केतु 20/04/2013	शुक्र 30/05/2031	सूर्य 09/07/2047	चंद्र 11/12/2059
केतु 26/12/1998	शुक्र 20/12/2015	सूर्य 11/05/2032	चंद्र 07/12/2048	मंगल 08/05/2060
शुक्र 26/12/2001	सूर्य 08/10/2016	चंद्र 11/12/2033	मंगल 05/12/2049	राहु 27/05/2061
सूर्य 20/11/2002	चंद्र 07/02/2018	मंगल 20/01/2035	राहु 23/06/2052	गुरु 03/05/2062
चंद्र 21/05/2004	मंगल 14/01/2019	राहु 26/11/2037	गुरु 29/09/2054	शनि 12/06/2063
मंगल 08/06/2005	राहु 08/06/2021	गुरु 08/06/2040	शनि 08/06/2057	बुध 08/06/2064
शुक्र 20 वर्ष 08/06/2064 08/06/2084	सूर्य 6 वर्ष 08/06/2084 08/06/2090	चंद्र 10 वर्ष 08/06/2090 09/06/2100	मंगल 7 वर्ष 09/06/2100 10/06/2107	राहु 18 वर्ष 10/06/2107 00/00/0000
शुक्र 08/10/2067	सूर्य 25/09/2084	चंद्र 09/04/2091	मंगल 05/11/2100	राहु 30/08/2107
सूर्य 08/10/2068	चंद्र 27/03/2085	मंगल 08/11/2091	राहु 24/11/2101	00/00/0000
चंद्र 08/06/2070	मंगल 02/08/2085	राहु 09/05/2093	गुरु 30/10/2102	00/00/0000
मंगल 08/08/2071	राहु 27/06/2086	गुरु 08/09/2094	शनि 09/12/2103	00/00/0000
राहु 08/08/2074	गुरु 15/04/2087	शनि 08/04/2096	बुध 05/12/2104	00/00/0000
गुरु 08/04/2077	शनि 27/03/2088	बुध 07/09/2097	केतु 04/05/2105	00/00/0000
शनि 08/06/2080	बुध 31/01/2089	केतु 08/04/2098	शुक्र 04/07/2106	00/00/0000
बुध 09/04/2083	केतु 08/06/2089	शुक्र 08/12/2099	सूर्य 09/11/2106	00/00/0000
केतु 08/06/2084	शुक्र 08/06/2090	सूर्य 09/06/2100	चंद्र 10/06/2107	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग्य के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 17 वर्ष 9 मा 9 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 11/06/2024 19/02/2027	शनि - केतु 19/02/2027 30/03/2028	शनि - शुक्र 30/03/2028 30/05/2031	शनि - सूर्य 30/05/2031 11/05/2032	शनि - चंद्र 11/05/2032 11/12/2033
बुध 28/10/2024 केतु 25/12/2024 शुक्र 06/06/2025 सूर्य 26/07/2025 चंद्र 15/10/2025 मंगल 12/12/2025 राहु 08/05/2026 गुरु 16/09/2026 शनि 19/02/2027	केतु 15/03/2027 शुक्र 21/05/2027 सूर्य 10/06/2027 चंद्र 14/07/2027 मंगल 07/08/2027 राहु 06/10/2027 गुरु 29/11/2027 शनि 02/02/2028 बुध 30/03/2028	शुक्र 09/10/2028 सूर्य 05/12/2028 चंद्र 12/03/2029 मंगल 18/05/2029 राहु 08/11/2029 गुरु 11/04/2030 शनि 11/10/2030 बुध 24/03/2031 केतु 30/05/2031	सूर्य 17/06/2031 चंद्र 16/07/2031 मंगल 05/08/2031 राहु 26/09/2031 गुरु 11/11/2031 शनि 05/01/2032 बुध 23/02/2032 केतु 15/03/2032 शुक्र 11/05/2032	चंद्र 29/06/2032 मंगल 01/08/2032 राहु 27/10/2032 गुरु 12/01/2033 शनि 14/04/2033 बुध 05/07/2033 केतु 07/08/2033 शुक्र 12/11/2033 सूर्य 11/12/2033
शनि - मंगल 11/12/2033 20/01/2035	शनि - राहु 20/01/2035 26/11/2037	शनि - गुरु 26/11/2037 08/06/2040	बुध - बुध 08/06/2040 05/11/2042	बुध - केतु 05/11/2042 02/11/2043
मंगल 03/01/2034 राहु 05/03/2034 गुरु 28/04/2034 शनि 01/07/2034 बुध 28/08/2034 केतु 20/09/2034 शुक्र 27/11/2034 सूर्य 17/12/2034 चंद्र 20/01/2035	राहु 25/06/2035 गुरु 11/11/2035 शनि 23/04/2036 बुध 18/09/2036 केतु 18/11/2036 शुक्र 10/05/2037 सूर्य 01/07/2037 चंद्र 26/09/2037 मंगल 26/11/2037	गुरु 29/03/2038 शनि 22/08/2038 बुध 01/01/2039 केतु 23/02/2039 शुक्र 28/07/2039 सूर्य 12/09/2039 चंद्र 28/11/2039 मंगल 21/01/2040 राहु 08/06/2040	बुध 10/10/2040 केतु 01/12/2040 शुक्र 26/04/2041 सूर्य 09/06/2041 चंद्र 22/08/2041 मंगल 12/10/2041 राहु 21/02/2042 गुरु 18/06/2042 शनि 05/11/2042	केतु 26/11/2042 शुक्र 25/01/2043 सूर्य 12/02/2043 चंद्र 14/03/2043 मंगल 04/04/2043 राहु 29/05/2043 गुरु 16/07/2043 शनि 11/09/2043 बुध 02/11/2043
बुध - शुक्र 02/11/2043 02/09/2046	बुध - सूर्य 02/09/2046 09/07/2047	बुध - चंद्र 09/07/2047 07/12/2048	बुध - मंगल 07/12/2048 05/12/2049	बुध - राहु 05/12/2049 23/06/2052
शुक्र 22/04/2044 सूर्य 13/06/2044 चंद्र 07/09/2044 मंगल 07/11/2044 राहु 11/04/2045 गुरु 27/08/2045 शनि 07/02/2046 बुध 03/07/2046 केतु 02/09/2046	सूर्य 17/09/2046 चंद्र 13/10/2046 मंगल 31/10/2046 राहु 17/12/2046 गुरु 27/01/2047 शनि 17/03/2047 बुध 30/04/2047 केतु 18/05/2047 शुक्र 09/07/2047	चंद्र 21/08/2047 मंगल 20/09/2047 राहु 07/12/2047 गुरु 14/02/2048 शनि 06/05/2048 बुध 18/07/2048 केतु 17/08/2048 शुक्र 12/11/2048 सूर्य 07/12/2048	मंगल 29/12/2048 राहु 21/02/2049 गुरु 10/04/2049 शनि 07/06/2049 बुध 28/07/2049 केतु 18/08/2049 शुक्र 17/10/2049 सूर्य 05/11/2049 चंद्र 05/12/2049	राहु 23/04/2050 गुरु 26/08/2050 शनि 20/01/2051 बुध 01/06/2051 केतु 25/07/2051 शुक्र 28/12/2051 सूर्य 12/02/2052 चंद्र 30/04/2052 मंगल 23/06/2052

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	8
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

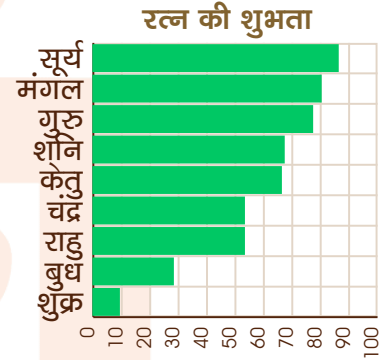
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	86%	व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	80%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	77%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	67%	स्वास्थ्य, पराक्रम, सुख
लहसुनिया	केतु	66%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	53%	कम खर्च, भाग्योदय
गोमेद	राहु	53%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पन्ना	बुध	28%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	9%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	08/06/2005	74%	31%	67%	28%	77%	22%	73%	66%	53%
गुरु	08/06/2021	93%	59%	86%	3%	89%	0%	67%	53%	66%
शनि	08/06/2040	74%	31%	67%	41%	77%	22%	80%	59%	53%
बुध	08/06/2057	93%	31%	80%	52%	77%	22%	67%	53%	66%
केतु	08/06/2064	74%	31%	86%	28%	77%	22%	55%	31%	78%
शुक्र	08/06/2084	74%	31%	80%	41%	77%	34%	73%	59%	72%
सूर्य	08/06/2090	99%	59%	86%	28%	83%	0%	55%	31%	53%
चंद्र	09/06/2100	93%	66%	80%	41%	77%	9%	67%	31%	53%
मंगल	10/06/2107	93%	59%	92%	3%	83%	9%	67%	31%	72%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/08/1987-17/12/1987	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

बुरा स्वास्थ्य
पराक्रम
दम्पति
धनार्जन
कम खर्च

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकामी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासनिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्,

भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में शुक हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(08/06/2021 - 08/06/2040)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 08/06/2021 को आरम्भ और 08/06/2040 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन-शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन-संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ-सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमें स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी ।



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

**अंतर्दशा :- शनि - बुध
(11/06/2024 - 19/02/2027)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 08/06/2021 को प्रारंभ होकर 08/06/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 11/06/2024 को प्रारंभ होकर 19/02/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। समाजसेवा, दान-धर्म और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। विभिन्न स्थानों से सम्मान प्राप्त होगा, साख अच्छी रहेगी। स्पष्टवादी होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - केतु
(19/02/2027 - 30/03/2028)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 08/06/2021 को प्रारंभ होकर 08/06/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 19/02/2027 को प्रारंभ होकर 30/03/2028 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। एकादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सट्टेबाजी, लॉटरी, शेयर, आदि से अचानक धन कमा सकते हैं। धन को संचित करेंगे। बुद्धिमान और प्रसन्न होंगे। विभिन्न तीर्थों आदि की यात्रा का आनंद लेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(30/03/2028 - 30/05/2031)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 08/06/2021 को प्रारंभ होकर 08/06/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 30/03/2028 को प्रारंभ होकर 30/05/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, धनागम उत्तम होगा, समाज में प्रतिष्ठा होगी। प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। बहुत सी महिलाएं आपके अधीनस्थ कार्य कर सकती हैं। व्यापार में आप कुशल होंगे, चिकित्सा क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। तंत्र-मंत्र आदि में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।